आपणो ढूंढाड़, आपणी संस्कृति

साथण

अक्टूम्बर सूं दिसम्बर-2020

nirmaan
empowering communities

नफो कमावा कअ ताणी नूता की जुक्त कोनअ।

संपादक:-
रामजी लाल बैरवा, पूरण मल बैरवा एवं बजरंग लाल बैरवा
सहयोगी:-
मुकेश कुमार योगी, रतन लाल योगी एवं कविता योगी

15 बातां- ज्यांको पालण आपां नअ कोरोना-19 सूं बचबा कअ तोड़ी करणो चाईजे।

1. आपस मंअ सई दूरी रांख'र एक-दूसरा सूं नमस्कार करो।

2. एक-दूसरा सूं सई दूरी बणार रांखो।
(2 गज की दूरी (6 फुट)

3. हर टेम घरां बणायेड़ो मास्क पअर'र रांखो।

4. खुद की आंख, नाक अर मूण्डा कअ हात मत लगाओ।

5. खुद का नाक अर मूण्डा नअ साफ रांखो, जिसूं सांस सई आवअ।

6. अपणा हातां नअ बर-बर मंअ बडिया धोवो।

7. जादा पकड़बाळी जगां नअ बर-बर मंअ साफ करो जिसूं कीटाणु मर जावअ।

8. पान, गुटका-जरदा अर तमाकू मत खावो अर सार्वजनिक ठोर पअ मत थूंको।

9. बना काम कोई बी यातरा मत करो।

10. कस्या बी आदमी कअ साथ भेदभाव मत करो।

11. भीड़-भाड़ सूं बचो अर निकां रअवो।

12. गलत अर झूंटी जाणकारी नअ सोसल मीडिया पअ मत भेजो।

13. कोरोना-19 का बारां मंअ सई जाणकारी लेवो।

14. कोरोना की कसी बी परकार की जाणकारी कअ तोड़ी केंदर टोल फिरी सायता नम्बरां 1075 पअ या राज्य का सायता नम्बरां पअ फून करो।

15. कस्या बी परकार की दिमागी परेसानी हअज्या तो, मनोसामाजिक (डागदर) सायता सेवा को स'योग ले।

चुटकला

घर हालर्यो छ

रामफूल :- मदन नअ खियो, यार उठ भूकंप आर्यो दीखअ, सारो घर हालर्यो छ।

मदन :- सोजा-सोजा घर पड़अलो तो मकान मालिक को पड़अलो, आपां तो करायादार छां।

पुलिसाळा सूंई मजाक कर्यो छ

एक चोर चोरी कर'र भागर्यो छो, वो गळी का मोड़ पअ एक पुलिसाळा सूं टक्कराग्यो। पुलिसाळो ऊनअ डाट्यो अर खियो, तू कुण छ?

चोर :- पअली तो चोर घबराग्यो, फेर वो भागतो-भागतो खियो, म्हं तो चोर छूं।

पुलिसाळो :- ऊनअ भागतो देख'र हंस'र बोल्यो, अजीब पागल आदमी छ, पुलिसाळा सूंई मजाक कर्यो छ।

ढुंढाड़ी मंअ बात

बावळ्यो परिवार

पराणा जमाना की बात छ। एक गांव मंअ एक घासी नांव को आदमी छो। घासी की लुगाई को नांव केसर छो। घासी सारअ दन खेतां मंअ काम करअ छो अर केसर घरां ढाण्डा-ढोरां नअ एरअ-सेरअ छी। घासी नतकई खेतां पअ सूं मोड़ो घरां आवअ छो। ऊं गांव मंअ एक दन स्याम की टेम नरा जोर को करस आ जावअ छ। जन्दाड़अ केसर कन माचिस मंअ एक ई सींक छी। ऊंसूं बी वा चमनी जोले छ। घासी खेतां पअ सूं आवअ छ, तो ऊनअ छोरा-छोरी भूखां मरता अर रोता लादअ छ। घासी ऊंकी लुगाई नअ बोल्यो, कअ ये छोरा-छोरी क्यूं रोर्या छ? केसर बोली, अजी चूलो कांईं सूं बाळूं? माचिस मंअ एक ई सींक छी, जिसूं बी म्ह चमनी जोली। पअल्यां का आदमी अतराई भोळा छा। घासी मन मंअ सोच्यो, आज तो नरा जोर को करस आर्यो छ अब रात मंअ दुकान पअ बी न जा सकूं। अब वानअ चमनी सूं चूलो बाळबा को ग्यान कुण दे?

सगळा घरका भूखां मरता एक ठोर पअई पाल बछार बअठ जावअ छ। वअ सारा घरका सारी रात बास्यां मरता मर्या। सुंवारई करस डटयो जद्यां घासी कअ घरां गांव को पटेल बाबो आयो। घासी का छोरा-छोरी भूखां मरता रोर्या छा। वानअ देख'र पटेल बाबो घासी नअ बोल्यो, ये छोरा-छोरी क्यूं रोर्या छ? घासी खियो, ये छोरा-छोरी तो भूखां मरता रोर्या छ। पटेल बाबो बोल्यो, कांईं बात हअगी? घासी बोल्यो, म्हानअ सारी रात हअगी भूखां मरता म्हे चूलो कांईं सूं बाळता। म्हांकन माचिस ई कोन छी? पटेल बाबो घासी का घर ओड़ी झांक्यो तो घर कअ मांईनअ चमनी जुपरी छी। पटेल बाबो बोल्यो, अरअ बावळया घासी ईं चमनी सूं चूलो बाळ लेतो नअ। घासी बोल्यो, म्हानअ तो पतो ई कोन छो कअ चमनी सूं बी चूलो बळअ छ। पाछअ घासी की गांव का घणी मजाक कर्या।

सीख:- सोच समज'र काम करो।

भजन

आवअ न जावअ, मरअ नईं जनमअ

आवअ न जावअ, मरअ नईं जनमअ।
नईं धूप, नईं छाया, कबीर म्हानअ एसा अणघड़ ध्याया॥(टेर)
धरती नईं ज्यां जनम धारिया, नीर नईं ज्यां न्हाया।
दाई-माई का काम नईं छा, ना कोई गोद खिलाया॥
कबीर म्हानअ एसा अणघड़ ध्याया..... ॥(1)
बिन कपड़ा म्हानअ भगवां रमाया, बिना गेरु रंग ल्याया।
बिना आड म्हानअ कस्या लंगोटा, अणबअ जोग चलाया॥
कबीर म्हानअ एसा अणघड़ ध्याया..... ॥(2)
बिना अग्नी म्हानअ धूण्यां घाली, बिना अग्नी तप ल्याया।
बिना भबूति भस्म रमाया, एसा ग्यान चलाया॥
कबीर म्हानअ एसा अणघड़ ध्याया..... ॥(3)
पग बिना पंथ, नेण बिना निरखअ, बिना कान सुण पाया।
खअ गोरखजी सुणो कबीरा, बिना जीब गुण गाया॥
कबीर म्हानअ एसा अनघड़ ध्याया..... ॥(4)

साख

गुरु बडा परमारती अर सीतल ज्यांका अंग।
तपत बुजादे दास की, गुरु देदे अपणा रंग॥
मत कर खोटा करम मानवी, एक दन सारी बात बतासी।
जमड़ा मारे टांट मंअ, थारअ गळअ लगा दे फांसी॥

कावतां

1. हाण्डी मंअ हअलो, वो थाळी मंअ आवअलो।

अर्थ = जो मन में है, वह ही प्रकट होगा।

पेळ्यां

1. काळी छूं कंकाळी छूं, काळा बल मंअ रअऊं छूं, मरदां कअ कान्दअ खेलूं छूं, लाल पाणी पीऊं छूं।

अर्थ :- **तलवार**

2. छोटी सी तळाई, जिमंअ न्हावअ गुटयो नाई।

अर्थ :- **पुवो**

3. धोळो घोड़ो झाबरी पूंछ, न जाणअ तो थारा बाप न पूच।

अर्थ :- **मूळो**

अगर थे कोई कला चावअ छ, तो अस्यो बेवार करो, जे थांकअ खनअ पअली सूं छा।

सम्पर्क

निर्माण सोसायटी

वार्ड नं. 6, तकिया मस्जिद के पास, काली हवेली के पीछे,
देशवालियों का मोहल्ला, चाकसू, जयपुर, राजस्थान–303901
Ph.-01429-243997, 9982668204, 9887748510
Email- rajasthanlanguages@nirmaan.org.in
Web- www.dhundari.org.in, www.nirmaan.org.in